सद्गुरु तत्व बोध

SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली | श्री साई शके : 30-31
अंक - 108 | सितम्बर, अक्टोबर - 2011

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month
©All rights reserved with Publisher

।। ऊँ।।

।। ऊँ श्री साईनाथाय नमः।।

।।ऊँ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः।।

विजया दशमी

गुरू बंधू-भगिनीयों से,

आज हम और हमारे जैसे असंख्य लोग इस जगत में देवी देवता/गुरू की उपासना अपने-अपने धर्म तथा हिसाब से करते आ रहे हैं, सिर्फ इस ध्येय से कि उनकी तकलीफें दूर हो तथा सुख या सुखों के साधनों का लाभ इस जीवन में प्राप्त हो। परन्तु आज सवाल यह है कि क्या इस जीवन का सुख या सुखों का साधन प्राप्त करने से जन्म में आने का मकसद पूर्ण हुआ? इसी आशा और अपेक्षा से आज लाखों, करोड़ों लोग श्री शिरड़ी, श्री जगतगुरू साईनाथ महाराज के दर्शन के लिए जाते हैं। वह भक्त अपनी-अपनी परेशानियाँ दूर करने के लिए बाबा से प्रार्थना करते हैं। अधिकतर लोग सुखों के साधनों की मांग करते हैं। बाबा भी उन्हें उदारता से सुखों का लाभ करा देते हैं। किसलिये ? कि उनकी श्रृद्धा और आस्था भगवान पर बढ़े मगर साथ-साथ दुआ भी देते हैं कि वह अपने इस जीवन का लाभ अपने खुद के लिए और इस दुनिया के लिए कर सके।

आज हमारे पास अगर कोई पैन मांगने आया तो वह पैन हमारे पास होना आवश्यक है, अगर कोई चीज हमारे पास नहीं है तो हम क्या दे सकते हैं। प.पू. बाबा तथा सद्गुरू नाथ दादा महाराज के पास दुनिया के सुखों के सभी साधन हैं जिनका सुख अपने जीवन में कभी लिया नहीं तथा आने वाले भक्तों को देने से फकीरों की झोली और भी भरती जाती है। मगर यह सब न समझते हुए हम उन्हीं सुखों के साधनों में उलझे हुए हैं और इसी विचार से बाबा की पूजा और प्रार्थना करते हैं।

वं. दादा जी ने परम् पूज्य बाबा से वही चीज़े मांगी जो उनके पास थी और अपने अवतार कार्य में आह्वानित की "साज्ञात-परब्रह्म"। वह परब्रह्म

जो उत्पत्ति-स्थिति, लय इन शक्ति से उत्पन्न होता उसे आह्वानित किया, श्री दत्तपंथ, श्री नाथ पंथ तथा श्री सूफी पंथों की एकरूपता से। इसीलिए सभी लोग श्री साई बाबा को भगवान के अवतार, नाथों के अवतार, तथा सूफी विभूति ऐसे अनेक रूप में देखते हैं। हर धर्म के व्यक्तियों को साईबाबा की भक्ति कर के समाधान प्राप्त होता है क्योंकि उनके पास साझात परब्रह्म है उस शक्ति का प्रयोग सभी लोग एहिक प्राप्ति और उससे मिलने वाली इच्छाओं की पूर्णता को समाज समाधान मानता है। इसी का पारमार्थिक स्वरूप वं. दादा जी ने अपने अवतार कार्य में श्री साईनाथ महाराज जी के मार्गदर्शन से प्राप्त किया और सोम्य करके हमारे जैसे सामान्य व्यक्तियों को आसानी से प्राप्त हो इसलिए सिद्ध किया।

"सिद्ध ऊँकार साधना में।"

इस ऊँकार साधना में कितनी सिद्धता है, कितनी शक्ति है उसके बारे में कितना भी विचार करें बहुत कम है। लेकिन यह ऊँकार साधना जो हम हर रोज करते हैं, वह करते समय हमारी सोच कैसी हो, या हमें जब कहा जाता है कि ऊँकार साधना बारह अंगों से करनी चाहिए, इसका मतलब क्या है इसका प्राथमिक रूप से आज के शुभ अवसर पर विचार करते हैं।

"ऊँकार साधना – बारह अंग"

ऊँकार साधना की शुरूआत मंगलाचरण से होती हैं शास्त्र के अनुसार कोई भी लाभदायक विधि के शुरू में श्री गणेश जी का आह्वान होता है, जिससे गणेश जी की शक्ति आने के बाद उसकी सहायता से होने वाली विधि जिसके लिए कर रहे हैं, वह शक्ति जैसे वास्तु पूजन या शादी इत्यादी इसके लिए किया जाता है। उसी प्रकार पहला श्लोक :

"स जयति सिन्दुरवदनों देवो यत्पादपंकजस्मरणम्।
वासरमणिरिव तमसां राशिनाशयति विध्नानाम्।।

यह श्लोक गणेश जी की शक्ति का आह्वान है जिसका अर्थ है कि गणेश जी का मुख सिंदूर रंग का है (जो कि आनन्दमय कोश का रंग है) पांव कमल के फूल जैसे हैं, गणेश जी का स्मरण करते ही जैसे सूरज की रोशनी अंधकार का नाश करती है वैसे ही सभी विध्नों का नाश होता है। यह ध्वनि-लहरी-ध्वनि-प्रकाश इस साधना की आस्था का आह्वान है।

इसके बाद पांच श्लोक अलग-अलग देवताओं की शक्ति का आह्वान करने के लिए है। इसके अनेक लाभ या अनेक अर्थों में से केवल एक अर्थ का हम आज विचार करते हैं। यह पांच श्लोक पांच कोशों के लिए है

या कुन्देंदुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्राांवृता।
या वीणावरददण्डमंण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाडयापहा।।

यह श्लोक सरस्वति देवी माँ का है जो कि अपने आनन्दमय कोश के लिए है। ऊँकार का प्रकाश हमारे आनन्दमय कोश को प्रकाशमान कर दे इस उद्देश्य से यह श्लोक है :

मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्।।

यह श्लोक मनोमय कोश के सम्बन्ध में है। अगर गुरू की कृपा हो गई तो मूक आदमी (गूंगा) बोलने लगे, मतलब हम, जिन्हें ईश्वर की वाणी/गुरूवाणी प्राप्त होकर हम बोलने लगेंगे और जीवन सफर में सही मायने में चलने लगेंगे, जीवन को सार्थक करेंगे। मतलब पंगु लंघयत गिरिं-गुरूकृपा होने पर लगड़ा आदमी भी पहाड़ पर आसानी से चढ़ सकेगा।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदिरयेत्।।
वसुदेवसुतं देवं कंसचाणुरमर्दनम्।
देवकीपरमानंद कृष्ण वन्दे जगद्गुरूम्।।

इस श्लोक का अर्थ ऐसा है कि नर, नारायणों को नमस्कार कर के, सरस्वति देवी को वंदन करके महाभारत ग्रंथ पढ़ने की शुरूआत करनी है। महाभारत ग्रंथ का मतलब दैनन्दिन जीवन का अर्थ। यह समझने के लिए विज्ञानमय कोश का विकास करके जीवन की सार्थकता प्राप्त करनी है।

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणुरमर्दनम्।
देवकीपरमानंद कृष्ण वन्दे जगद्गुरूम्।।

यह श्लोक अन्नमय कोश के सम्बन्ध में है हमारे अन्नमय कोश में जो राक्षस बैठे हैं, कंस और चाणक्य उनको मारने के बाद ही अन्नमय कोश विकसित होने पर ही आत्मिक तत्व साकार होगा। तभी गुरूकृपा होगी और जीवन को जगतगुरू संज्ञा मिलेगी। मतलब हमें गुरूकृपा होने की, गुरू के चरणों में स्थान मिलेगा। इसके आगे का श्लोक प्राणमय कोश के लिए है मतलब हृदय स्थान में श्री गुरू को स्थान देना है ऐसे गुरू जो साक्षात परब्रह्म हैं जिनके पास उत्पत्ति, स्थिति, लय मतलब ब्रह्मा, विष्णु और महेश त्रिगुणात्मक शक्ति है।

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरूः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

इसके बाद जिन देवी देवताओं ने और गुरू ने यह कार्य, यह ऊँकार साधना सिद्ध की है उनका जय जयकार किया है।

शक्तिपीठ प्रार्थना : संकल्प प्रार्थना, जिसमें हमारा और इस जगत का मानवीय जीवन ईश्वरमय हो ऐसी सिद्धता है। इस संकल्प के लिए जो गुरूशक्ति आह्वानिक होकर प्रवाहित होती है उसका एक सूक्ष्म भाग हमारे माध्यम में धारण होता है, उसी से हमारे माध्यम का यथोचित विकास साध्य होता है।

मारूती स्त्रोत

मारूती स्त्रोत के बाद ऊँकार, न्यास, श्री सद्गुरू नामःस्मरण, महामंत्र और तारक मंत्र से ऊँकार साधना पूर्ण होती है। ऊँकार से ब्रह्माण्ड शक्ति का आह्वान और धारणा, न्यास से इस शक्ति की धारणा और शरीर के दोषों का परिमार्जन, फिर सद्गुरू नामःस्मरण से गुरू शक्ति का आह्वान और धारणा, महामंत्र में इस गुरू शक्ति का विनियोग सर्व मंगलमय करने के लिए हो ऐसी प्रार्थना और आखिरी में तारक मंत्र जिसमें सभी देवी-देवताओं की और विभूतियों की शक्ति अंतर्भूत है, उस गुरू शक्ति का आह्वान विश्व शांति के लिए और हमारे पारमार्थिक उन्नत्ति के लिए किया जाता है। आखिरी में गुरू का जयजयकार।

यह ऊँकार साधना बारह अंगों से करनी है, मतलब क्या? इसका प्राथमिक स्वरूप में अर्थ जानने की कोशिश करते हैं, जिससे इस साधना का ज्यादा से ज्यादा लाभ हम उठा पायें।

ऊँकार साधना के बारह अंग

स्वर - ताल - लय, उच्चार - मध्य - लय
उच्चार - आचार - विचार, सूर - नाद - निनाद

यह बारह अंग सिर्फ ऊँकार साधना से नहीं तो हमारे हर रोज के जीवन से, दिनचर्या या आचरण से सम्बन्धित है।

इसमें पहले तीन अंग प्रमुख रूप से ऊँकार साधना में मंगलाचरण से शुरू होते है।

स्वर – ताल – लय :

स्वर का मतलब सप्त स्वर में कौन से स्वर में साधना करनी है यह निश्चित करके वही स्वर सम्पूर्ण साधना में और आखिरी तक कायम रखना। इसमें कंठस्थान के स्वर का उपयोग करके ज्यादा से ज्यादा लाभ होगा ऐसा वं. दादा जी ने कहा है।

ताल मतलब Rythm : मंगलाचरण से ताल का संयम (Control) प्राप्त करना है।

लय मतलब गति(Speed) : ताल, जो निश्चित किया है, वह किस गति से बोलना है वह लय अंग है

हमारी हर रोज की दिनचर्या में यह अंग जुड़े हुए हैं। यह अंग हमारे जीवन में साकार हुए तो साधना में साकार होंगे और vice varsa।

'स्वर', जो कि हम दिनभर बात करते हैं, वह कंठस्थान मतलब मनोमय कोश से होना अपेक्षित है। जिस तरह केन्द्र पर या ऑफिस में बॉस के साथ प्रेम से और नम्रता से बात करते है, क्या उसी तरह हम अपने घर में बच्चों से, बीबी से, व्यवहार में अन्य जनों से बर्ताव/बात करते हैं? अगर यह मनोमय कोश से मतलब मन से/ दिल से एक जैसा सभी के साथ व्यवहार प्रेम से और नम्रता से होता है तो ऊँकार साधना का पहला अंग 'स्वर' प्राप्त होगा।

ताल मतलब <u>Rythm</u>। क्या हमारी दिनचर्या को कोई Rythm है। उपासना या सेवा उस Rythm का हिस्सा है? आज हमारे शरीर को एक ताल/ Rythm है, खाना, पीना, सोना, त्याज्य चीजें शरीर के बाहर फैंकना, heart beats सांस लेना, अशुद्ध वायु उच्छवास से बाहर छोड़ना इत्यादी। क्या उसी प्रकार हम अपने त्याज्य विचार दूसरे दिन बाहर फैंक देते हैं। ऐसे कई अपायकारक विचार हम अपने साथ रखे हुए हैं जिससे हमें और बाकी लोगों को भी तकलीफ हो। ऐसे विचार विसर्जित करना मतलब 'ताल' अंग की धारणा करना।

लय मतलब गति : मतलब जीवन की गति जो दिन ब दिन बढ़ती जा रही है, इसमें न खुद के लिए समय है न औरों के लिए। यह गति को नियंत्रित करना, जिससे हम अपने खुद के लिए और जगत के लिए इस गुरूमार्ग से कुछ लाभ ले पायें, मतलब 'लय' अंग से साधना।

आगे की तीन अंग : **उच्चार, मध्य, लय** । इसका अनुभव और सीख प्रमुख रूप से ऊँकार करते समय मिलता है। इन बारह अंगों में हर एक अंग का अभ्यास करते समय, उसमें पहले के सभी अंग शामिल किए जाते हैं। मतलब स्वर, ताल, लय इनकी प्रचिती मंगलाचरण और मारूती, स्त्रोत में प्रमुख रूप से लेनी है, वे अंग ऊँकार में भी समाये है। ऊँकार का स्वर, मतलब कंठस्थान का उच्चार, ताल मतलब Rythm या Scale 5 सेकण्ड ऊँकार, 1 सेकण्ड Pause, 1.5 सेकण्ड श्वास, 1 सेकण्ड Pause, ऊँकार। लय मतलब ऊँकार की गति जो हमारे उच्छवास पर मतलब श्वास (सांस) छोड़ने की गति पर निर्धारित है। संथा गति से ऊँकार करना मतलब लय अंग का अंतर्भाव योग्य प्रकार से करना।

उच्चार-मध्य-लय। इसमें उच्चार मतलब स्वर-ताल-लय ध्यान में रखकर ऊँकार का उच्चार करना। मध्य मतलब 2.5 सेकण्ड तक स्वर ऊपर करके फिर अगले 2.5 में लय करना। यहाँ लय का मतलब है पूर्णत्व। इस प्रकार 5 सेकण्ड में ऊँकार में उच्चार-मध्य-लय इन अंगों का अनुभव लेना।

हमारी हर रोज की दिनचर्या में उच्चार, मध्य, लय मतलब दिनभर किये गये प्रत्येक कार्य में जो तीन भाग अंतर्भूत है वह सम्पूर्णता से करना, काम की शूरूआत, उसका मध्य और उसका पूर्णत्व। मतलब अपना हर एक कार्य पूरी तरह करना कि जिससे कर्म की निर्मिती पूरी तरह हो। इस प्रकार किया गया हर एक कार्य समाधान प्राप्त कर देता है, जिससे सम्पूर्ण कर्म की निर्मिती होकर अगले जन्म की तैयारी करनी है। अगर सम्पूर्ण कर्म की निर्मिती नहीं हुई तो जब वह कर्म वापस अपने मध्य में प्रवाहीत होगा तब उस कर्म का पूर्णत्व गुरू शक्ति से या उपासना/सेवा से भरना पड़ेगा और ज्यादा अपूर्णता प्रवाहीत होते समय फिर असमाधान का अनुभव देगी। इसीलिए हर एक कार्य उच्चार-मध्य-लय इन अंगों से करना आवश्यक है। सुबह उठने के बाद हमारी चद्दर को तय (Fold) करके रखने से शुरूआत करके, रात को सोने तक।

फिर, उच्चार-आचार-विचार। इन तीन अंगों का अनुभव और सीख न्यास करते समय प्रमुख रूप से प्राप्त होता है। इससे हमारे काया-वाचा-मन की एकरूपता साध्य करनी है। इसके 'उच्चार' में पहले के 6 अंग अंतर्भूत हैं, मतलब स्वर-ताल-लय और उच्चार-मध्य-लय इन अंगों का विचार करके उनके अनुरूप उच्चार करना और विचार मतलब प्राथमिक रूप में यह विचार करना है कि, 10 सेकण्ड में ऊँकार करते समय, उसका उच्चार-मध्य-लय किस प्रकार हो और उसी के अनुसार अपना आचार मतलब हाथों की गति कैसे करें इत्यादी। इससे विचारों पर अंकुश लगकर मन की धारणा होने लगती है और काया-वाचा-मन मतलब आचार (काया), उच्चार(वाचा) और विचार(मन) इनकी एकरूपता होने लगती है।

हमारी हर रोज की दिनचर्या में कोई भी क्रिया करते समय हमारे दिमाग में हजारों विचार चलते रहते हैं। इन विचारों पर संयम प्राप्त करके काया-वाचा-मन से दिन की हर एक क्रिया करना मतलब उच्चार-आचार-विचार इन अंगों से साधना करना। कोई भी क्रिया पूरी तरह तभी होगी जब वह करते समय उचित विचार किए जायें। मतलब सुबह उठने के बाद सिर्फ चद्दर की तय कर दी तो काम पूरी तरह नहीं हुआ तो वह करते समय यह विचार आवश्यक है कि इस चद्दर ने रात भर मेरा संरक्षण किया है, उसके भी मुझ पर कुछ उपकार हुए है तो उसको ठीक तरह रखना यह मेरा कर्त्तव्य है। यह विचार करके उस चद्दर की तय करना और उसे ठीक तरह से रखना मतलब वह कार्य पूरी तरह से हुआ। इसी प्रकार दिन का हर एक कार्य विचार कर के योग्य प्रकार से करना मतलब उच्चार, आचार, विचार इन अंगों का लाभ लेना।

अगला अंग है **'सुर'**। स्वर और सुर में क्या अंतर है, तो स्वर तो पेटी (हार्मोनियम) से भी निकलता है, लेकिन जिस स्वर में भाव या भावना अंतर्भूत होती है वह सुर है, जो गले से ही निकलता है। इस सुर में पहले के नौ अंग अंतर्भूत है - स्वर-ताल-लय, उच्चार-मध्य-लय और उच्चार-आचार-विचार। इन नौ अंगों का अंतर्भूत करके सुर में श्री सद्गुरू नामःस्मरण कहना है। "ॐ श्री साईनाथायनमः" - 9, अक्षर, 9 अंग और नवनाथों की शक्ति जिनमें अंतर्भूत है उन दसवें नाथ का - श्री साईनाथ जी का यह नामःस्मरण है। यह नामःस्मरण 'सुर' अंग का प्रमुख स्वरूप में उपयोग करके करना है। 'सुर' का एक मतलब है, dive नदी में या पानी में जो dive मारते है उसे भी सुर कहते हैं। उसी प्रकार सुर से ब्रह्माण्ड शक्ति में dive मारनी है।

'सुर' अंग से साधना करके हमारा सूक्ष्म मन विकसित होता है जिसका प्रमुख तत्व है श्रृद्धा और सबुरी। इन तत्वों से सूक्ष्म मन की विकसितता हमें प्राप्त होती है। यह विकास हमारे जीवन के हर एक पल में होता है। कई बार ऐसे प्रसंग हमारे जीवन में आयेंगे कि जब यह श्रृद्धा और सबुरी कितना है इसका अनुमान हम अपने आप ही कर पायें। यह सूक्ष्म मन का विकास हो गया तो अगला अंग है 'नाद'।

श्री सद्गुरूनामः स्मरण सुर से किया तो सूक्ष्म मन का विकास हुआ और गुरूशक्ति की धारणा हुई। अब इस गुरूशक्ति का विनियोग जगत कल्याण के लिए हो इसलिए नाद अंग से महामंत्र का उच्चार करना है। जिसमें यह प्रार्थना है कि, 'सर्व मंगल मांगल्ये' मतलब सभी को मंगलमय जीवन प्राप्त हो। 'नाद' का मतलब है Resonance इसका एक उदाहरण इस प्रकार है कि अगर हमने दो तानपुरे एक ही Frequency में tune किये और एक ही रूम में रखकर एक तानपूरे की एक तार छोड़ने लगे तो थोड़ी देर बाद दूसरे तानपुरे की तार से आवाज आने लगती है। वही नाद है। मतलब हमने नाद अंग से महामंत्र का उच्चार किया तो वही Frequency से शक्तिपीठ के शक्ति में और फिर ब्रह्माण्ड शक्ति में Resonance होना है और वह नाद सभी का मंगल हो इसलिए जगत कल्याण के लिए शक्ति प्रवाहीत करेगा जिसका लाभ जगत में हर एक को होगा। यही नाद का पूर्णत्व मतलब 'निनाद' अवस्था है।

निनाद मतलब echo या प्रतिसाद। इस निनाद अंग को कार्यान्वित करने के लिए ऊँकार साधना में तारक मंत्र का अंतर्भाव है। तारक मंत्र मतलब वं. दादा जी का मंत्र, जिसमें सभी देवी-देवताओं की शक्ति, जिनका कृपाशीर्वाद वं. दादा जी को मिला, सभी दिव्य पूण्य विभूतियों की शक्ति जिनका मार्गदर्शन वं. दादा जी को मिला, उनका अंतर्भाव है। यह तारक मंत्र 'निनाद' अवस्था या सिद्ध करता है जिससे इस जगत का तारण होगा, जगत में विश्व शांति स्थापित करने वाला यह मंत्र है। और यह साध्य करते समय वह हमारे जीवन की पारमार्थिक उन्नत्ति, हमारे अनजाने में करके देगा।

बाबा के अमर दिन का सन्देश

शक्तिपीठ स्थापना का यह तीसरा तप **“लय”** सम्पूर्ण विश्व के लिए जितना महत्वपूर्ण है उतना ही इस विश्व का अंश होने के नाते हम गुरूभक्त इस विश्व के प्रति कौन से कर्त्तव्य निभा रहे हैं यह हमने सोचना हर गुरूभक्त के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है तथा अत्यन्त मुश्किल भी है, क्योंकि इस विश्व की उत्पत्ति जिस शक्ति से हुई है उस शक्ति का न आरम्भ है न ही अन्त है। इसीलिए परम पूज्य श्री पंतमहाराज जी ने गुरूभक्तों को यह चेतावनी दी है कि,

आरम्भ ना ही शेवट केसा मध्य स्थिनिला विसरू – नको,
संसारा मध्यें एक ही पाडल अनुभवाविण टाकु न को।

अर्थात : आरम्भ नहीं है तथा अंत भी नहीं है इसलिए तुमने ‘मध्य’ स्थिति को भूलना नहीं चाहिए और सदैव परमेश्वर को स्मरण करते रहकर श्री परमेश्वर के अनुभव के बिना इस संसार में, इस जगत में एक कदम भी चलना नहीं चाहिए।

वैज्ञानिक सिद्धांत के अनुसार जिस वस्तुमात्र का आरम्भ है उसका अन्त भी है ही तथा जिस वस्तुमंत्र का अंत होता है उसका आरम्भ भी कहीं न कहीं से हुआ होता ही है। लेकिन जिस शक्ति माध्यम से इस विश्व का निर्माण हुआ है वह शक्ति स्वयं पूर्ण है। इसलिए न उसका आदि है न अंत। इस शक्ति का अस्तित्व मध्य इस अवस्था में है। जैसे नदी का प्रवाह उसकी मध्य अवस्था में ही विस्तारित होता है उसी प्रकार इस ब्रह्माण्ड शक्ति का प्रवाह भी उसकी मध्य अवस्था में पूरे चराचर सृष्टि को समाये हुए हैं और इस अवस्था का अनुभव लेना इसी का अर्थ है मानवी धर्म का उदय होना। इस अवस्था का अनुभव साधक के लिए अत्यन्त अनमोल होता है।

साधना के दरम्यान उच्चार के बाद जो मध्य अवस्था का उद्गम होता है उसी में साधक को अपना जीवन ‘सुरमय’ बनाने का अवसर प्राप्त होता है और जीवन को सुरमय बनाने के लिए दूसरों के जीवन में आनन्द का निर्माण करना यही मानव जीवन का असली रूप है।

इस संसार में आने के बाद आत्मा इस संसार के विविध विषयों की पहचान सहजता से कर लेती है मगर इन सारे विषयों में ही वह अपने जीवन के ध्येय का विषय भी चुन लेती है। लेकिन केवल विषय चुन लेने से जीवन की सार्थकता पूरी नहीं होती है, क्योंकि मनुष्य का मन बड़ा अस्थिर होता है, जिस विषय को वह ध्येय मान लेता है उससे पूरी तरह अनुभव प्राप्त करने के पहले ही वह दूसरे विषय को अपनाता है और इसके कारण वह किसी भी विषय में सुख शांति समाधान प्राप्त नहीं कर सकता है और तब उसे यह महसूस होने लगता है कि वह निराधार है उसका जीवन दुश्वार है और इससे पहले अपने जीवन के प्रमुख विषय से और दूर जाने लगता है। मनुष्य के जीवन का प्रमुख विषय है मानवीय जीवन को इसी जन्म में सार्थक कर लेना, जिसके लिए पृथ्वी पर जन्म लिए हर प्राणीमात्र के जीवन में एक निश्चित विषय होता है जिसे ‘जन्म कारण’ कहते हैं जो पहले जमाने में प्रत्येक राष्ट्राभिमानी व्यक्ति के लिए उसका अपना राष्ट्र था।

आजतक इस जगत के प्रत्येक राष्ट्र के हजारों राष्ट्राभिमानी बाल, युवा, वृद्ध भूमिपुत्रों ने अपने राष्ट्र की तथा परीश्रम से इस विश्व की उन्नत्ति के लिए अपना जीवन सर्वस्व समर्पण करते समय अपना पारिवारिक जीवन और उसमें के सब सुख, सम्पत्ति, शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय आदि सभी का त्याग करके अपनी अगली पीढ़ी के हाथों में उन्नत विश्व की धरोहर सौंपी है। लेकिन इसमें यह भी महत्वपूर्ण है कि त्याग और बलिदान से प्राप्त हुई यह धरोहर जतन करने के लिए भी त्याग और बलिदान की ही आवश्यकता है क्योंकि विकास की नींव सबके निस्वार्थ प्रयत्नों से ही डाली जा सकती है। विभूतियों के कहने के अनुसार भी यह है कि इस विश्व को उन्नत बनाने के लिए विश्व के नागरिक के नाते प्रत्येक व्यक्ति को अपना अपना कर्त्तव्य निस्वार्थ और निरपेक्ष भावना से निभाते रहना अत्यंत आवश्यक है जिसमें हमारे भारत देश का योगदान बहुत मायने रखता है।

हमारे भारत देश की परम्परा अति प्राचीन है। दुनिया के अन्य स्थानों में जब मानव जंगली जीवन व्यतीत करते थे तब भारत में ऋषी मुनी जन मानव कल्याण के लिए यज्ञयाग कर रहे थे, मानवीय जीवन मीमांसा का

अध्ययन करके मनुष्य को जीवन-सार्थकता का मार्ग दिखा रहे थे। इसी प्रकार आज भी जब दुनिया के अन्य राष्ट्र अपने नित नये आविष्कारों से दुनिया को भौतिक सुख देने का कार्य कर रहे हैं तब दुनिया का आध्यात्म सम्पत्ति की देन देने की जिम्मेदारी हमारे भारत की ही है, जिसमें परम पूज्य जगत गुरू साईनाथ महाराज का मानवता धर्म, तथा विश्व शांति का संदेश है। परमपूज्य बाबा, वंदनीय दादाजी तथा पुण्य विभूतियों के मार्गदर्शन के अनुसार यह जिम्मेदारी असल में भारत के प्रत्येक नागरिक की है तथा गुरूकृपा से विकसित हुए हम गुरूभक्तों की सबसे अधिक है क्योंकि आज हम गुरूबंधु-भगिनी गुरूमार्ग का अवलम्ब करके अपना गुरू संस्कारित जीवन जी रहे हैं। अतः जिस मार्ग ने हमें अपना विकास आध्यात्मिक मार्ग द्वारा करने का बोध दिया है उस गुरूमार्ग के सदस्य बनने के बाद 'विश्व के अंश' इस नाते विश्व के प्रति हमारी जिम्मेदारी विशेष है। हम गुरूभक्तों द्वारा विश्व के लिए दुआ मांगने से विश्व कल्याण तथा विश्व शांति अवश्य होगी इसमें कोई संदेह नहीं है क्योंकि इसके लिए जगद्गुरू साईनाथ महाराज तथा पुण्य विभूतियों के कृपाशीर्वाद से सद्गुरू वंदनीय दादाजी ने परमात्मा से विश्व के लिए पसायदान की मांग जो की उन्होंने हमे दी शक्तिपीठ प्रार्थना है।

इसके अलावा विश्व उद्धार में हम गुरूभक्तों की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी यह है कि अगली पीढ़ी का मार्गदर्शन करके उन्हें विश्व के सुयोग्य नागरीक बनाने के लिए उन्हें सही दिशा दिखाना। वैसे ही गुरूभक्तों को इस अलौकिक गुरूशक्ति का लाभ प्राप्त होने के बाद, नाजायज बातें, राज्यकर्त्ताओं की आलोचना तथा राजकाज के बारे में व्यर्थ चर्चा करने में गुरूशक्ति का व्यय न होने देकर उसका उपयोग विश्व के प्रत्येक राष्ट्र के राज्यकर्त्ताओं के सद्गुणों को विकसीत करने के लिए तथा उनका पुण्य संचय वृद्धिगम हो इस सद्विचार से करके गुरूशक्ति की लहरें प्रत्येक राष्ट्र के राज्यकर्त्ताओं तक पहुँचाना यह हम गुरूभक्तों का कर्त्तव्य है जिसकी पूर्णता के लिए हमारी सहायता करने के लिए परमपूज्य बाबा तथा वंदनीय दादा जी द्वारा दी प्रतिमाएँ विश्व के सभी खण्डों में पहले ही स्थापित हुई है।

आज तक हम सभी पारमार्थिक शक्ति का आह्वान करने के लिए, किसी न किसी देवी-देवतार्जन या शास्त्रीय विधि से कराने के लिए अनेक साधनों पर निर्भर रहते थे परन्तु आज प.पू. सद्गुरू नाथ दादा महाराज ने प.पू. साईनाथ महाराज, देवी-देवताओं तथा पूण्य विभूतियों के मार्गदर्शन द्वारा ऐसी ऊँकार साधना सिद्ध कर के दी है जिससे हमारे दोषों का विमोचन हो, हमारे माध्यम का विकास हो और जगत में जिसके द्वारा विश्वशांति स्थापित करने तक का कृपार्शीवाद है। हमें सिर्फ यह ऊँकार साधना और उसके अनुरूप अपना आचरण/दिनचर्या ऊपर बताए अनुसार बारह अंगों से करनी है। इस सिद्ध ऊँकार साधना की इतनी ताकत है कि आज सेवक बताये हुए मार्गदर्शन अर्थात गुरूशक्ति द्वारा सीधे ब्रह्माण्ड शक्ति से एकरूप हो सकता है।

आज नए साल श्री साई शक-३० में हम यह ऊँकार साधना नियमित रूप से करने का निश्चय करें क्योंकि यह लोक कल्याण कार्य परिवार से समाज तक, समाज से राष्ट्र तक तथा राष्ट्र से दुनिया तक सम्पूर्ण विश्व को सम्भालने वाला है।

भक्तों का यह निश्चय यशस्वी हो जिसके लिए श्री जगतगुरू साईनाथ महाराज, श्री सद्गुरूनाथ दादा महाराज तथा पुण्य विभूतियों के कमल चरणों में सेवक की हाथ जोड़कर विनम्र प्रार्थना स्वीकार हो तथा शक्तिपीठ की दी हुई प्रार्थना द्वारा जगत में मानवीय धर्म का उदय होकर मानवीय जीवन ईश्वरमय हो। इसलिए आज हम सब मिलकर विश्व के लिए यह प्रार्थना करते हैं।

विश्व के लिए प्रार्थना

हे भगवान! विश्व के उद्धार के लिए जो महान विभूतियाँ विश्व के लिए त्याग और बलिदान किये राष्ट्र पुरुष तथा नेता, जो स्वयं कष्ट सहकर भी हरपल जूझ रहे हैं, उनके उपदेशों तथा आदेशोंनुसार हमारा आचरण पवित्र हो, ऐसी कृपा कीजिए।

अब तक हमारे द्वारा किए गये पापों तथा प्रमादों की पुनरावृत्ति न हो। विकट, आर्थिक तथा अन्य प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण परेशान होकर तथा क्षुद्र मनोविकारों के अधीन होकर,

अथवा संकुचित विचारों से वशीभूत होकर हमारे मन में आलस्य अज्ञान या अनुकरणवश उन विभूती राष्ट्र पुरूष एवं नेताओं के प्रति अयोग्य विचार आये हों, अथवा अयोग्य उच्चार हमारे मुँह से निकले हो, अथवा उनके आदेशों के विपरित कोई भी कार्य हुआ हो तो उसके लिए, उन सब के प्रति मैं आपकी तथा उन सबकी निस्पृह भाव से क्षमा चाहता हूँ/चाहती हूँ।

विश्व में सदा सुख, शांति, संतोष तथा विश्व के नागरिकों में एक दूसरे के प्रति ममता और आनन्द हमेशा बना रहे। उसी प्रकार विश्व के प्रति अटूट श्रद्धा हम सबके हृदय में सदा जागृत रहे।

उन्होंने सोचा हुआ विश्व-उन्नत्ति का महान कार्य हम अपने शेष जीवन में पूरा करने में यशस्वी हो सकें तथा अन्य भी अनेक सामाजिक सद्कृत्य करते रहें। इस प्रकार वह महान, दिव्य अलौकिक विभूतियाँ और राष्ट्रपुरूष हम पर सदा खुश रहे तथा विश्व पर आपकी कृपादृष्टि इसी तरह बनी रहे।

हे प्रभु! हमारे परिवार के सभी सदस्यों को अपना-अपना राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य कर्म निभाने की बुद्धि दीजिये। दुनिया के कई राष्ट्र आज सुख-समृद्धि का अनुभव ले रहे हैं फिर भी "विश्व-उन्नत्ति का कर्त्तव्य हर एक नागरिक पूरे प्रयत्नों से करे" इस पवित्र वचन से आपने संसार को जो पाठ पढ़ाया है, उसके अनुसार तथा विश्व के लिए बलि चढ़े हुए वीर पुरूषों के उपकारों का बदला अपकारों से न हों ऐसी बुद्धि, हे दया निधान, विश्व के सभी व्यक्तियों को आप दीजिए, केवल इतनी ही दुआ आपके चरणों में अत्यन्त दीन भाव से हम गुरूबंधु-भगिनी मांग रहे हैं।

।। शुभं भवतु ।।

जन्मों का सेवक
श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@mail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible